इल्म बड़ी दौलत है

इब्ने इंशा

इल्म बड़ी दौलत है।
तू भी स्कूल खोल।
इल्म पढ़ा।
फीस लगा।
दौलत कमा।
फीस ही फीस।
पढ़ाई के बीस।
बस के तीस।
यूनीफार्म के चालीस।
खेलों के अलग।
वेरायटी प्रोग्राम के अलग।
पिकनिक के अलग।
लोगों के चीखने पर न जा।
दौलत कमा।
उससे और स्कूल खोल।
उनसे और दौलत कमा।

कमाए जा, कमाए जा।
अभी तो तू जवान है।
यह सिलसिला जारी है।
जब त गंगा-जमना है।
पढ़ाई बड़ी अच्छी है।
पढ़।
बहीखाता पढ़।
टेलीफोन डायरेक्ट्री पढ़।
बैंक-असेस्मेंट पढ़।
मैट्रीमोनियल के इश्तहार पढ़।
और कुछ मत पढ़।
मीर और गालिब मत पढ़।
इकबाल और फैज़ मत पढ़।
इब्ने इंशा को भी मत पढ़।
वरना तेरा बेड़ा पार न होगा।
और हममें से कोई इस
परिणाम का जिम्मेदार न होगा।

इब्ने इंशा पाकिस्तान के जाने-माने शायर हैं।
यह नज्म उन्होंने १९७० में लिखी थी।
शिक्षा के बाजारीकरण पर यह एक तीखा प्रहार है।